# हिन्दुस्तान

शुक्रवार, 2 जुलाई 2010 नगर, आषाढ़, कृष्ण पक्ष, षष्ठी, विक्रम संवत 2067, नई दिल्ली, वर्ष 75, अंक 156, 18 पेज+ 4


# पराया होते-होते बचा कमल

## यूरोपीय पेटेंट ऑफिस को बताया कि भारत में 5वीं सदी से दिल के आयुर्वेदिक उपचार में इस्तेमाल होती है कमल से बनी दवाइयां

**मदन जैड़ा**

नई दिल्ली

आयुर्वेद में वर्णित चिकित्सा ज्ञान को भले ही देश में तरजीह नहीं मिल पाती हो लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियां इनके आधार पर एलोपैथिक दवाएं बना रही हैं। कोरिया की बहुराष्ट्रीय फार्मा कंपनी मैसर्स पुरीमेड लिमिटेड ने भारतीय फूल कमल से हृदयरोग की दवा बना ली तथा यूरोप में पेटेंट दाखिल किया। लेकिन भारत ने इस प्रयास को विफल कर दिया।

भारत ने यूरोपियन पेटेंट ऑफिस को प्रमाण दिए कि देश में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में पांचवीं शताब्दी से ही कमल से बनी दवाओं का इस्तेमाल दिल के उपचार में होता आया है।

ट्रडिशनल नालेज लाइब्रेरी (टीकेडीएल) के डायरेक्टर वी. के. गुप्ता के अनुसार मैसर्स पुरीमेड लि. ने कमल के औषधीय तत्वों से इस्केमिक हार्ट अटैक की दवा तैयार की और पेटेंट के लिए यूरोपीय पेटेंट आफिस में आवेदन किया। टीकेडीएल और यूरोपीय पेटेंट आफिस के बीच पहले ही समझौता हो चुका है। जैसे ही हमें इसकी खबर लगी हमने पूरे तथ्य यूरोपीय पेटेंट आफिस के समक्ष रखे। उन्हें बताया कि आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र की पुस्तकों रसयोग सागर, भेला समाहिता, सुश्रुत समाहिता एवं वंगसेना में कमल के औषधीय तत्वों से दिल की बीमारियों का उपचार का ब्यौरा है। भारत की तरफ से सवाल उठाया गया कि उपचार की जो विधि भारत में पांचवीं सदी से ही प्रचलित है, उस पर आज कोई कंपनी कैसे पेटेंट ले सकती है। डा. गुप्ता के अनुसार यूरोपीय पेटेंट आफिस ने उन्हें

सूचित किया है कि भारत द्वारा पेश तथ्यों के आधार पर पुरीमेड पेटेंट आवेदन ईपी-1781309 खारिज कर दिया है। इस बीच अपुष्ट सूत्रों से खबर मिली थी कि उपरोक्त कंपनी ने अरबों रुपये निवेश कर उक्त दवा को बनाना भी शुरू कर दिया था। दरअसल, पेटेंट फाइल करते ही दवा पर संबंधित कंपनी का अधिकार मान लिया जाता है। लेकिन पेटेंट खारिज हो जाने के अब कंपनी के सारे दावे खारिज हो गए हैं। इससे पहले टीकेडीएल से खरबूजे के छिलके, अश्वगंधा, अर्जुन, चाय की पत्तियों, ब्राह्मी, हल्दी, बंगाली चने, नीम, अलोवेरा, पुदीना तथा कलामेघा के औषधीय तत्वों से बनी दवाओं के पेटेंट यूरोपीय और अमेरिकी पेटेंट आफिसों से खारिज कराए हैं। टीकेडीएल के अफसरों का मानना है कि विदेशी पेटेंट कार्यालयों द्वारा भारतीय औषधीयों पर करीब 2000 पेटेंट हर साल दिए जा रहे हैं।

### टीकेडीएल

टीकेडीएल- आयुर्वेद, यूनानी तथा सिद्ध पैथियों के 2.20 लाख परंपरागत चिकित्सा फार्मूलों को इसमें डिजिटल और पेटेंट फार्मेट में लिपिबद्ध किया गया है। फार्मूले अंग्रेजी, अलावा फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश तथा जापानी भाषाओं में हैं। यूरोप और यूएस के पेटेंट कार्यालयों से टीकेडीएल का एग्रीमेंट हो चुका है तथा अब अन्य देशों के पेटेंट कार्यालयों से भी ऐसे ही करार किए जा रहे हैं।

### टीकेडीएल का फायदा

कुछ साल पूर्व यूरोप में नीम पर और अमेरिका में हल्दी पर पेटेंट कर लिए गए थे। तब भारत को इन्हें खारिज कराने में मुकदमा लड़ना पड़ा था जिसमें दस साल लगे और करीब दस करोड़ रुपये खर्च हुए। लेकिन टीकेडीएल के बनने के बाद अब जो पेटेंट खारिज हो रहे है, उनमें न तो मुकदमा लड़ना पड़ता है न ही समय की बर्बादी। सिर्फ चिट्टी-पत्री से इन्हें खारिज किया जा रहा है।

### उपेक्षा का परिणाम

- यूरोप में कमल से बनी दवा पर पेटेंट हथियाने की कोशिश विफल, भारत ने खारिज कराया दावा
- कोरियाई बहुराष्ट्रीय फार्मा कंपनी ने बना ली थी कमल के औषधीय गुणों से इस्केमिक हार्ट अटैक की दवा